

श्रीमद्भागवत स्कन्ध 8 अध्याय 14: विश्व-व्यवस्था

14 September 2026



एक कॉस्मिक युग के विशाल तन्त्र को कौन चलाता है — मनु, ऋषि, देवता, इन्द्र? राजा परीक्षित पूछते हैं, और श्रीशुकदेव उत्तर देते हैं: वे सब कार्य करते हैं, किन्तु वे सब एक परम पुरुष की आज्ञा से कार्य करते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्ञम में आपका पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिमयी यात्रा। भूत, वर्तमान और भविष्य के मनुओं की लम्बी नामावली सुनकर, राजा परीक्षित अब एक व्यावहारिक प्रश्न पूछते हैं — इन युगों में विश्व का प्रबन्धन ठीक-ठीक कैसे होता है, और कौन क्या करता है — और आठवें स्कन्ध के इस संक्षिप्त किन्तु प्रकाशमय चतुर्दश अध्याय में श्रीशुकदेव कॉस्मिक प्रबन्धन के सम्पूर्ण तन्त्र से पर्दा उठाकर उत्तर देते हैं।

अध्याय की जानकारी

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 8 (आठवाँ स्कन्ध)

- अध्याय: 14 (चतुर्दश अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: मनु और उनके अधिकारी विश्व का शासन कैसे करते हैं
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित से कहते हुए
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: गंगा-तट पर चलता वर्णन, प्रत्येक मन्वन्तर के शासन का वर्णन करते हुए
- केन्द्रीय विषय: किस प्रकार मनु, ऋषि, देवता और इन्द्र परमेश्वर के निर्देशन में विश्व का प्रबन्धन करते हैं, जो प्रत्येक युग में अनेक रूपों से कार्य करते हैं
- प्रमुख श्लोक श्रेणी: स्कन्ध 8, अध्याय 14, श्लोक 1-11
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

त्रयोदश अध्याय में श्रीशुकदेव ने चौदह मन्वन्तरों का अपना वृत्तान्त पूर्ण किया, प्रत्येक युग के मनु, ऋषि, देवता और इन्द्र, तथा उन प्रत्येक में भगवान के अवतरण के नाम बताए। उस महान सूची ने स्वाभाविक रूप से यह प्रश्न उठाया कि ऐसा विशाल तन्त्र वस्तुतः कैसे कार्य करता है — और यही प्रश्न अब राजा परीक्षित अपने गुरु से पूछते हैं, इस अध्याय का आरम्भ करते हुए।

राजा का प्रश्न

राजा परीक्षित अपने गुरु से कौस्मिक प्रबन्धन की कार्यप्रणाली समझाने को कहते हैं: मन्वन्तरों में मनु और अन्य अधिकारी अपने विविध कर्तव्यों में कैसे और किसके द्वारा नियुक्त होते हैं? यह एक विचारशील शासक का प्रश्न है, जो स्वयं शासन के विषय में कुछ जानता है और युगों के फेर के पीछे की दिव्य व्यवस्था को समझना चाहता है।

सब परम पुरुष की आज्ञा में

श्रीशुकदेव का उत्तर तुरन्त विषय के मर्म तक जाता है: विश्व-प्रबन्धन का प्रत्येक पद, मनु से लेकर देवताओं तक, एक ही परम अधिकार के अधीन है।

श्रीऋषिरुवाच

मनवो मनुपुत्राश्च मुनयश्च महीपते ।

इन्द्राः सुरगणाश्चैव सर्वे पुरुषशासनाः ॥ २ ॥

श्रीऋषिरुवाच मनवो मनुपुत्राश्च मुनयश्च महीपते इन्द्राः सुरगणाश्चैव सर्वे पुरुषशासनाः

अर्थ: श्रीशुकदेव ने कहा — हे पृथ्वीपते, मनु, मनुओं के पुत्र, ऋषि, इन्द्र और देवताओं के गण, ये सब परम पुरुष की आज्ञा में हैं। (स्कन्ध 8, अध्याय 14, श्लोक 2)

भगवान के विविध रूपों — यज्ञ आदि, जिनका पहले नाम लिया गया — द्वारा निर्देशित होकर मनु और अन्य विश्व का प्रबन्धन चलाते हैं। उनके पद चाहे कितने ही उच्च हों, वे एक उच्चतर इच्छा के उपकरण ही रहते हैं, अपने नियोक्ता के प्रयोजन को पूर्ण करते हुए।



श्रीशुकदेव बताते हैं कि मनु, उनके पुत्र, ऋषिगण, इन्द्र और समस्त देव-समुदाय परम पुरुष की प्रत्यक्ष आज्ञा के अधीन विश्व का शासन चलाते हैं (श्लोक 2-3)।

श्रीशुकदेव बताते हैं कि मनु, उनके पुत्र, ऋषि, इन्द्र और देवताओं के सब वर्ग परम पुरुष की प्रत्यक्ष आज्ञा में विश्व का प्रबन्धन चलाते हैं (श्लोक 2-3)।

प्रत्येक युग में वेद और धर्म का नवीकरण

फिर श्रीशुकदेव वर्णन करते हैं कि शाश्वत व्यवस्था काल में कैसे जीवित रखी जाती है। चार युगों के प्रत्येक चक्र के अन्त में, महर्षि अपने तप के बल से उन वैदिक ग्रन्थों को पुनः प्राप्त करते हैं जो काल से लुप्त हो गए थे, और इनके द्वारा शाश्वत धर्म का सत्य नए सिरे से जाना जाता है। तब मनु, श्रीहरि द्वारा अपने हृदय में उपदेशित और पूर्णतः सजग, अपने समय में पृथ्वी पर धर्म के चार अंगों — तप, शौच, दया और सत्य — का प्रचार करते हैं। प्रजा के रक्षक, मनुओं के पुत्र और उनके वंशज पीढ़ी-दर-पीढ़ी, मन्वन्तर के अन्त तक अंश-अंश में धर्म और पृथ्वी की रक्षा करते हैं, जबकि देवता और महान यज्ञों में भाग लेने वाले सब अपना भाग पाकर पवित्र व्यवस्था को धारण करते हैं।



प्रत्येक युग-चक्र के अन्त में महान ऋषि अपनी तपस्या से उस वैदिक ज्ञान को पुनः प्राप्त करते हैं जो काल से लुप्त हो गया था, और श्रीहरि से अन्तःप्रेरित मनु पृथ्वी पर धर्म का प्रचार करते हैं (श्लोक 4-6)।

युगों के प्रत्येक चक्र के अन्त में महर्षि अपने तप से काल में लुप्त वैदिक ज्ञान को पुनः प्राप्त करते हैं, और मनु, श्रीहरि द्वारा अन्तर में उपदेशित होकर, पृथ्वी पर धर्म का प्रचार करते हैं (श्लोक 4-6)।

भगवान अनेक रूपों से कैसे शासन करते हैं

इन सब नियुक्त रक्षकों के पीछे स्वयं भगवान खड़े हैं, रूपों की अनन्त विविधता से कार्य करते हुए। भगवान द्वारा प्रदत्त तीनों लोकों के ऐश्वर्य को भोगते हुए, इन्द्र उन लोकों की रक्षा करते और वर्षा भेजते हैं। और प्रत्येक युग में श्रीहरि जगत का मार्गदर्शन करने अनेक वेशों में प्रकट होते हैं।

ज्ञानं चानुयुगं ब्रूते हरिः सिद्धस्वरूपधृक् ।

ऋषिरूपधरः कर्म योगं योगेशरूपधृक् ॥ ८ ॥

ज्ञानं चानुयुगं ब्रूते हरिः सिद्धस्वरूपधृक् ऋषिरूपधरः कर्म योगं योगेशरूपधृक्

अर्थ: प्रत्येक युग में श्रीहरि, सिद्धों का रूप धारण कर, आध्यात्मिक ज्ञान का उपदेश देते हैं; ऋषियों का रूप धारण कर, पवित्र कर्म का मार्ग सिखाते हैं; और योगेश्वरों का रूप धारण कर, योग की साधना सिखाते हैं। (स्कन्ध 8, अध्याय 14, श्लोक 8)

श्रीशुकदेव आगे कहते हैं कि प्रजापतियों का रूप धारण कर भगवान सृष्टि का कार्य चलाते हैं; स्वतन्त्र सम्राट रूप में दुष्टों का दमन करते हैं; और, अपनी बदलती अवस्थाओं सहित काल रूप में प्रकट होकर, वे ही समस्त वस्तुओं के विलय का कारण बनते हैं। यद्यपि दार्शनिक अपनी अनेक पद्धतियों से उन्हें विविध रूप में वर्णित करते हैं, उनकी बुद्धि नाम-रूप की माया से आवृत होने के कारण, भगवान केवल ऐसे तर्क से वस्तुतः नहीं जाने जाते।



प्रत्येक युग में भगवान अनेक रूपों में प्रकट होते हैं — ज्ञान देने वाले सिद्ध पुरुषों के रूप में, पवित्र कर्म सिखाने वाले ऋषियों के रूप में, और योग के स्वामियों के रूप में — भीतर और बाहर से सृष्टि का शासन करते हुए (श्लोक 8-10)।

प्रत्येक युग में भगवान अनेक रूपों में प्रकट होते हैं — सिद्धों रूप में ज्ञान देते, ऋषियों रूप में पवित्र कर्म सिखाते, और योगेश्वरों रूप में — भीतर से और बाहर से सृष्टि का शासन करते हुए (श्लोक 8-10)।

एक कल्प का मान

श्रीशुकदेव इस संक्षिप्त अध्याय का समापन उसी प्रकार करते हैं जैसे पिछले का किया था, कॉस्मिक काल के विशाल मान से।

एतत् कल्पविकल्पस्य प्रमाणं परिकीर्तितम् ।

यत्र मन्वन्तराण्याहुश्चतुर्दश पुराविदः ॥ ११ ॥

एतत् कल्पविकल्पस्य प्रमाणं परिकीर्तितम् यत्र मन्वन्तराण्याहुश्चतुर्दश पुराविदः

अर्थ: यह एक लघु कल्प का मान बताया गया है, जो एक महाकल्प का अंश है, जिसके भीतर प्राचीन ज्ञान के ज्ञाता कहते हैं कि चौदह मन्वन्तर होते हैं। (स्कन्ध 8, अध्याय 14, श्लोक 11)

चौदह मन्वन्तरों से बना यह विस्तार ब्रह्मा का एक दिन है — विधाता के विशाल जीवनकाल के भीतर एक लघु कल्प, और उस मान का एक और स्मरण जिस पर दिव्य व्यवस्था खुलती है।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. प्रत्येक अधिकार एक उच्चतर अधिकार की सेवा करता है। मनु, ऋषि, इन्द्र और देवता सब वास्तविक पद धारण करते हैं, फिर भी सब परम पुरुष की आज्ञा में कार्य करते हैं। सृष्टि में कोई शक्ति अन्ततः स्वतन्त्र नहीं (श्लोक 2-3)।

2. शाश्वत सत्य कभी वस्तुतः लुप्त नहीं होता। यद्यपि वैदिक ज्ञान काल से ग्रस लिया जाता है, महर्षि उसे प्रत्येक चक्र में पुनः प्राप्त करते हैं, और मनु पृथ्वी पर धर्म का नवीकरण करते हैं। भगवान यह सुनिश्चित करते हैं कि उन तक लौटने का मार्ग सदा उपलब्ध रहे (श्लोक 4-5)।

3. भगवान अनगिनत रूपों से कार्य करते हैं। सिद्धों, ऋषियों, योगेश्वरों, प्रजापतियों और यहाँ तक कि काल रूप में भी, भगवान जगत् को धारण, मार्गदर्शन और विलीन करते हैं। उनकी क्रिया अस्तित्व के प्रत्येक कोने में व्याप्त है (श्लोक 8-9)।

4. धर्म के चार अंग हैं। मनु तप, शौच, दया और सत्य का प्रचार करते हैं। ये चार मिलकर प्रत्येक युग में धर्ममय जीवन का व्यावहारिक रूप बनाते हैं (श्लोक 5)।

5. भगवान केवल तर्क से नहीं जाने जाते। दार्शनिक भगवान को अनेक परस्पर-विरोधी रूपों में वर्णित करते हैं, उनकी दृष्टि माया से आवृत; वे केवल भक्ति से जाने जाते हैं, शरणागति से रहित तर्क से नहीं (श्लोक 10)।

एक भक्तिमय चिन्तन

यह छोटा अध्याय उस प्रश्न का चुपचाप उत्तर देता है जिसे हम सब लिए फिरते हैं, चाहे हम उसे कभी शब्दों में रखें या न रखें: वस्तुतः प्रभारी कौन है? जगत् अपनी अनेक शक्तियों के बल पर चलता प्रतीत हो सकता है — शासक और संस्थाएँ, प्राकृतिक बल, घटनाओं की केवल गति। भागवत उस धारणा को कोमलता से सुधारता है। प्रत्येक पद और प्रत्येक बल के पीछे, वर्षा भेजने वाले इन्द्र से लेकर शास्त्रों को सुरक्षित रखने वाले ऋषियों तक, एक ऐसा पुरुष खड़ा है जिसकी इच्छा वे सब पूर्ण करते हैं। इसमें कुछ गहराई से स्थिर करने वाला है। इसका अर्थ है कि जगत् के विशाल तन्त्र का कोई भाग बेलगाम, अनदेखा, या संयोग की दया पर नहीं चल रहा। वही भगवान जो मनुओं को नियुक्त करते और उनके हृदय में उपदेश देते हैं, वही भगवान हमारे अपने हृदय में निवास करते हैं, यदि हम सुनें तो हमारा मार्गदर्शन करते हुए। और अध्याय की समापन चेतावनी स्मरण रखने योग्य है: वे अन्ततः चतुर तर्क से नहीं, चाहे वह कितना ही विद्वत्तापूर्ण हो, अपितु भक्ति में हृदय के विनम्र मुड़ाव से जाने जाते हैं। दिव्य व्यवस्था के भीतर भली-भाँति जीना पहले उसे पूर्णतः समझना नहीं, अपितु उन एक का भरोसा और सेवा करना है जो उसे धारण करते हैं।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज जो भी दायित्व आपके भाग में आए — कार्य में, घर में, किसी छोटे कर्तव्य में — आरम्भ से पूर्व रुकें और चुपचाप स्मरण करें कि आप, मनुओं और ऋषियों की भाँति, एक उच्चतर इच्छा के उपकरण रूप में कार्य करने के लिए हैं। अपना कार्य भगवान को “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय” के शब्दों से अर्पित करें, अन्तर से वैसे ही मार्गदर्शन माँगते हुए जैसे मनु अपने हृदय में श्रीहरि द्वारा मार्गदर्शित थे। साधारण कार्य को भी उस महान व्यवस्था के भीतर सेवा का एक छोटा कर्म बनने दें जिसे स्वयं भगवान धारण करते हैं।

उपसंहार

यह चतुर्दश अध्याय, यद्यपि संक्षिप्त, एक निश्चितता छोड़ जाता है: कॉस्मिक व्यवस्था में कुछ भी अपने स्वयं के अधिकार से नहीं चलता। मनु, ऋषि, इन्द्र और देवता — प्रत्येक अपना पद निभाते हैं, किन्तु प्रत्येक पद उसी एक परम पुरुष की आज्ञा में है, जो अनगिनत रूप धारण कर सृष्टि को धारण, उपदेशित और यथासमय विलीन करते हैं। दार्शनिक चाहे कितना ही तर्क करें, वे उन्हें पकड़ नहीं पाते; वे केवल वहीं पाए जाते हैं जहाँ

हृदय भक्ति में झुकता है। कॉस्मिक शासन का यह ढाँचा अब पूर्ण होने पर, कथा आगे उस वृत्तान्त की ओर मुड़ती है जिसकी वह दीर्घकाल से तैयारी कर रही थी — बली और भगवान के वामन-अवतार की कथा।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जाग्रत करे।

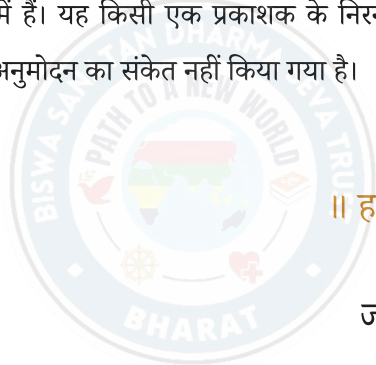
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), आठवाँ स्कन्ध, चतुर्दश अध्याय, पृष्ठ 794–795।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़्डम • विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुरूप प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक से किसी सम्बद्धता अथवा उसके अनुमोदन का संकेत नहीं किया गया है।



॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव



ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-8-chapter-14-the-functions-of-a-manu-and-the-management-of-the-universe-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज़्डम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट